श्री पार्श्वनाथ स्वामी की स्तुति

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, मेटो मेटो जी संकट हमारा।।
निशदिन तुमको जपूं, पर से नेहा तजूं।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा।।

मेटो मेटो....

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा के सुत प्राण प्यारे।
सब से नेहा तोड़ा, जग से मुंह को मोड़ा।।

संयम धारा।। मेटो मेटो....

इन्द्र और धरणेंन्द्र भी आये, पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुख नहीं पावे कदा।।

सेवक थारा।। मेटो मेटो....

जग के दुःख की तो परवाह नहीं हैं।
स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं हैं।
मेटो जामन मरण होवे ऐसा यतन पारस प्यारा।।

मेटो मेटो....

लाखों बार तुम्हें शीश नवांऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं।
'पंकज' व्याकुल भया दर्शन बिन यह जिया लागे खारा।।